IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

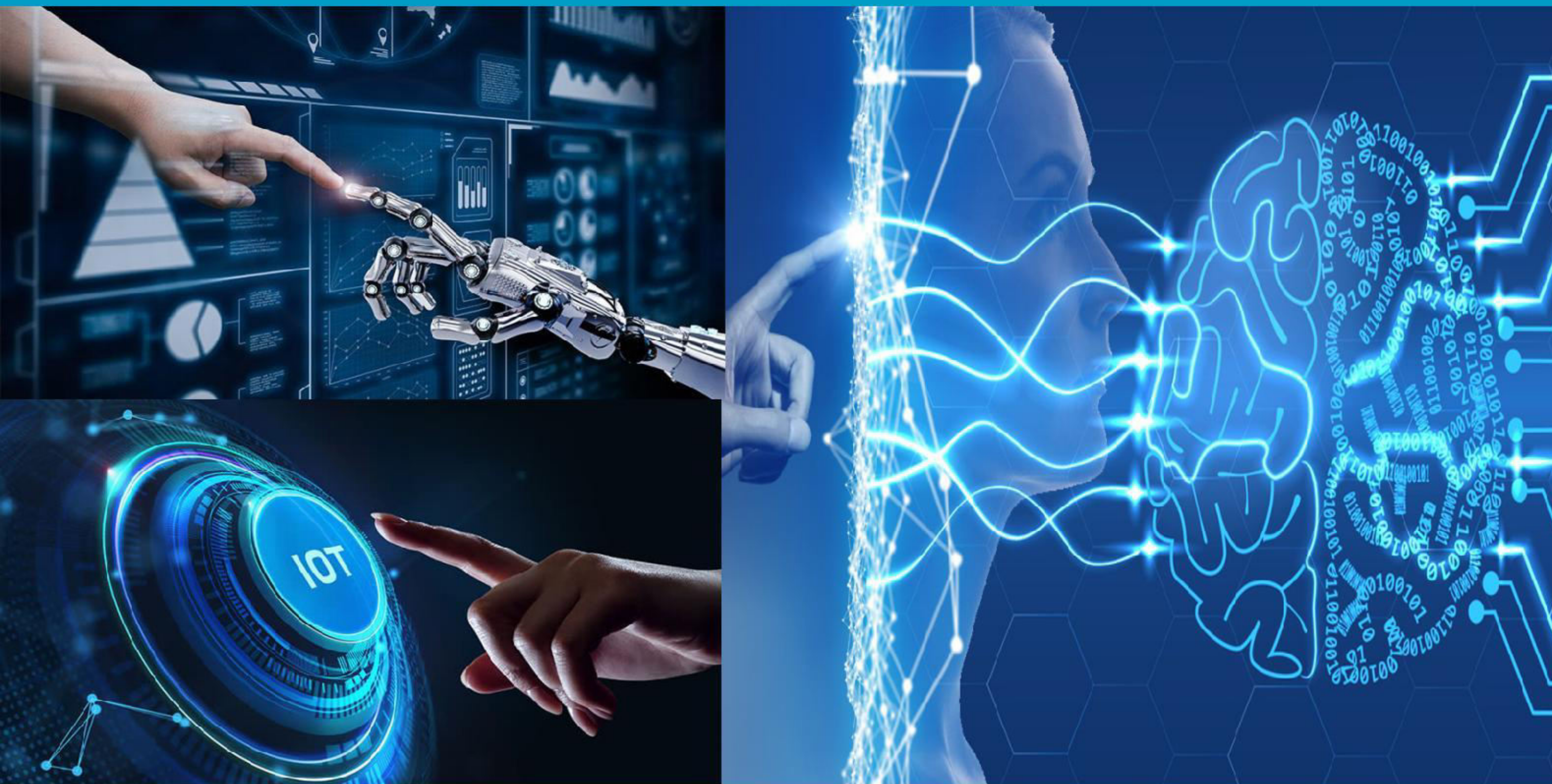

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 9, Issue 3, March 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.580

+91 99405 72462 +9163819 07438 ijmrsetm@gmail.com www.ijmrsetm.com

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 3, March 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0903015 |

मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में नारी उत्थान व नारी चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति

Gurmit Singh

Associate Professor in Dept. of Hindi, Govt. College, Bundi, Rajasthan, India

सार

मैथिलीशरण गुप्त जी द्विवेदी युग के कवियों में उच्च स्थान रखते हैं। उनकी रचनाओं में राष्ट्रीयता समाज सुधार युग बोध के साथ-साथ भारतीय संस्कृति एवं नारी का भी चित्रण हुआ है। गुप्त जी ने अपने महाकाव्य साकेत में विरहिणी उर्मिला, ममतामयी माँ कैकेयी का तथा यशोधरा खण्डकाव्य में यशोधरा तथा विष्णुप्रिय में नायिका का चित्रण अद्‌भूत ढंग से किया है। मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी कविताओं के माध्यम से भारतीय नवजागरण और राष्ट्रीयता की भावना के प्रचार-प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान किया है। नयी कविता और उसके बाद आने वाली हिन्दी कविता के लिए इस प्रकार की क्षमता का सर्वथा अभाव मिलता है। इस दृष्टि से मैथिलीशरण गुप्त को आधुनिक काल का तुलसीदास कहा जा सकता है। मध्य काल के कवि तुलसीदास का लोकनायकत्व आधुनिक काल के मैथिलीशरण गुप्त में ही उपलब्ध होता है।

जनभाषा को साहित्य की भाषा बनाने का जो अभियान भारतेन्दु ने छेड़ा था, उसे पूर्णता प्रदान करने में पूर्ण सफलता मैथिलीशरण गुप्त को ही मिली है। अतीत की विरासत को लेकर नवीन के निर्माण में जिस निपुणता के साथ मैथिलीशरण गुप्त अग्रसर हुए हैं, इसे हिन्दी साहित्य-क्षेत्र में विरल ही माना जाएगा। गर्हित सामंतवादी प्रवृत्तियों के साथ ही साम्राज्यवाद की जनविरोधी प्रकृति के समुचित उद्‌घाटन का सूत्रपात भी गुप्त जी द्वारा ही हुआ है। इन सभी दृष्टियों से मैथिलीशरण गुप्त का एक ऐतिहासिक महत्व है।

परिचय

इन्होने नारी सम्बन्धों विचारों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि गुप्त जी ने नारी के सम्पूर्ण जीवन को जिन दो पंक्तियों में बाँटा है वे नारी की भावना को व्यक्त करती है।[1]

गुप्त जी नारी के सम्बन्ध में कहते हैं कि

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में दूध है और आँखों में पानी।।

गुप्त जी नारी के इस अक्षमता पर दुःख प्रकट करते है साथ ही वे नारी को पुरुष से श्रेष्ठ भी मानते है। वे उसे पुरुष से अत्यधिक सहनशील मानते हैं। वे नारी को श्रेष्ठ मानते हुए कहते हैं कि

एक नहीं दो दो मात्राएँ नर से भारी नारी।।

गुप्त जी नारी पर लगाए गए बन्धनों का विरोध करते हैं। गुप्त के अत्याचार, शोषण का शिकार नारी की स्थिति अत्यधिक दयनीय है। पुरुष उस पर विश्वास नहीं करता ये विडम्बना ही है कि पुरुष के तो दोष क्षम्य है परन्तु नारी का एक भी दोष क्षम्य नहीं होता और वह अत्याचार व शोषण का शिकार होती है।[2]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 3, March 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0903015 |

Maithilisharan gupt

अधिकारों के दुरूपयोग,
कौन कहाँ अधिकारी।
कुछ भी स्वत्व नहीं रखती क्या, अर्धांगिनी तुम्हारी।।
नारी पर विश्वास करने वाला यह पुरुष भी तो नारी की ही कोख से पैदा हुआ है। जन्मदात्री होकर भी उसे अपशब्द कहना, अत्याचार करना, क्रूरता दिखाना क्या उचित है ? गुप्त जी कहते है कि

उपजा किन्तु अविश्वासी नर हाय! तुझी से नारी।
जाया होकर जननी भी है तू ही पाप-पिटारी।।
गुप्त जी ने नारी के विविध रूपों का भी चित्रण किया है। बेटी से बहू, माँ, गृहिणी, प्रिया कहीं पति के वियोग को सहने वाली, तो कहीं पति की मृत्यु पर विधवा, कहीं वीरांगना के रूप में है। कहीं नारी समाजसेविका के रूप में समाज की सेवा कर रही है।[3]

साकेत में उर्मिला अपने पति लक्ष्मण के मार्ग में बाधा नहीं बनती। वह अपने प्रिय पति को वन जाने देती। गुप्त कृत यशोधरा में भी नायिका को अपने प्रिय से यही शिकायत होती है कि वे मुझे बताकर जाते। यदि वे मुझे बताकर जाते तो मुझे आत्मसन्तोष होता। अपनी व्यथा को इस प्रकार कहती है
सखि वे मुझसे कहकर जाते।
सिद्धि हेतु स्वामी गए यह गौरव की बात।
पर चोरी-चोरी गए यही बङी व्याघात।।

कह, तो क्या मुझको वे अपनी पथबाधा ही पाते ?
मुझको बहुत उन्होंने माना, फिर भी क्या पूरा पहचाना ?
मैंने मुख्य उसी को जाना जो वे मन में लाते।
सखी वे मुझको कहकर जाते।

चित्रकूट में सीता अपनी कुटिया को ही राजमहल मानती है औश्र पति के साथ अपने आप को बङी सौभाग्यवती समझती है। इस प्रकार गुपत जी ने सीता को आदर्श नारी के रूप में चित्रित किया है।
गुप्त जी नारी का स्वाभिमानी रूप भी चित्रित किया है।

उर्मिला को अपने रूप का दर्प है। वह कामदेव को फटकार लगाती है और उसे अपने सिन्दूर बिन्दु की ओर देखने की चुनौती देती हुई है कि यह शंकर जी के अग्नि नेत्र की भाँति उसे भस्म कर देगा। 'यशोधरा' में भी गौतम बुद्ध जब वन से लौटते है तो वे उनसे मिलने नहीं जाती। बुद्ध स्वयं उनसे मिलने जाते है। गुप्त जी कहते हैं कि[4]

मानिनी मान तजो लो रही तुम्हारी बान।
दानिनी आए स्वयं द्वार पर यह भव तत्र भवान्।।

गुप्त जी ने नारी को गौरवपूर्ण स्थान दिया है। उन्होंने अपने काव्य में उसके गौरवपूर्ण रूपों को उकेरा है। गुप्त जी की नारी भावना उदात्त भाव की है। वे नारी को आदर्श रूप में स्थापित करते है।[5]

विचार-विमर्श

राष्ट्रीय नवजागरण के कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों में से एक प्रश्न समाज में नारी की स्थिति पर पुनर्विचार का भी सामने आया था। समाज सुधार के लिए 19वीं शती में जो आंदोलन चलाए गए उनमें ब्रह्म समाज, आर्य समाज प्रमुख थे। इन आंदोलनों और राजा राममोहन राय,

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 3, March 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0903015 |

विवेकानंद, दयानंद आदि समाज सुधारकों ने स्त्री की सामाजिक प्रस्थिति का डटकर विरोध किया। साहित्येतिहास में मध्यकाल के बाद रीतिकाल में तो नारी की स्थिति भोग्या मात्र ही बन कर रह गई थी, जिसका तीव्र विरोध राष्ट्रीय नवजागरण के दौरान दिखाई पड़ता है। व्यक्ति स्वतंत्रता की भावना ने नारी स्वतंत्रता की भावना को भी बल दिया। राष्ट्रीय आंदोलन में नारी माथलीशरण गुप्त का काव्य भी पुरुष के समकक्ष बढ़-चढ़कर हिस्सा ले सकती है, इस भावना को बल मिला। नारी के बारे में बदले हुए इस विचार का मैथिलीशरण गुप्त पर भी गहरा प्रभाव पड़ा। "साकेत", "यशोधरा", "जैयिनी" "हिडिम्बा" जैसे उनके काव्यग्रंथ उनकी नारी भावना को विस्तार से व्याख्यायित करते हैं।[6]

मैथिलीशरण गुप्त नारी जीवन के प्रति अपार सहानुभूति रखने वाले कवि हैं। लेकिन उनके सभी नारी पात्र समाज के एक विशेष वर्ग (सवर्ण) से आए हैं। उनकी लगभग नारी पात्र ऐसी हैं, जिनके पति किसी कार्य के उद्देश्य से उन्हें छोड़कर चले गए हैं। इसलिए वे सभी "उपेक्षिता" हैं। नारी चित्रण के माध्यम से, इनके दुख-दर्द और पीड़ा की अभिव्यक्ति के माध्यम से गुप्त जी समाज में नारी की स्थिति बदलना चाहते हैं।

गुप्त जी के स्मरणीय नारी पात्र "साकेत", "यशोधरा" आदि प्रबंध काव्यों में हैं। "साकेत' की रचना की प्रेरणा गुप्त जी को कवीन्द्र रवीन्द्र के निबंध "काव्येर उपेक्षिता" तथा आचार्य द्विवेदी जी के लेख "कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता' से मिली थी। प्रारंभ में "साकेत' का नामकरण "उर्मिलाउत्ताप" था बाद में बदल कर इसका नाम गुप्त जी ने "साकेत" किया। "साकेत" पूरा करने में कवि को सोलह वर्ष लगे। रामकथा पर आधारित "साकेत" को गुप्तजी ने यथासंभव राष्ट्रीय आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। "साकेत" का केंद्रबिंदु "उर्मिला' है जो मूल राम कथाओं में एक उपेक्षित पात्र की तरह ही चित्रित हुई हैं।[7]

गुप्त जी को "उर्मिला" की व्यथा, विरह, वेदना, त्याग और व्यक्तित्व की दृढ़ता ने प्रभावित किया है। "उर्मिला" के इन अछूते व्यक्तित्व के पक्षों को उन्होंने आधुनिक संदर्भों में उद्घाटित किया है। गांधी युग में जब गुप्त जी रचनारत थे तब समाज में व्यक्ति का महत्व उतना स्थापित नहीं हो पाया था और परिवार समाज की एक प्रमुख इकाई था। इसलिए भी नारी के व्यक्तित्व के जिन पक्षों पर उनका अधिक ध्यान गया वे थे उसका मातृत्व, पत्नीत्व और इसी संदर्भ में उसकी स्वतंत्र सत्ता और महत्ता।

साकेत में "उर्मिला' के चरित्र को गुप्त जी ने स्वाभिमानी, जागृता, शक्तिरूपा, वीरांगना के रूप में चित्रित करने का प्रयत्न किया है जो सैनिकों में मातृभूमि के प्रति मर मिटने का हौसला पैदा करने की प्रेरणा शक्ति देती है। सीताहरण और शक्ति के प्रहार से लक्ष्मण की मूर्ण के प्रसंग को जब हनुमान सुनाते हैं तब साकेत के सभी निवासी रावण से युद्ध करने के लिए निकल पड़ते हैं और सीता को कारागार से मुक्त करके शत्रुघ्न प्रजा को रावण की लंका लूटने का आदेश देते हैं, तब उर्मिला माथे पर सिंदूर लगा, हाथ में माला लेकर दुर्गा का वेश धारण करके गरजती हुई उनके सामने आ खड़ी होती है और तेजस्वी वाणी में घोषणा करती है :

नहीं, नहीं पापी का सोना[8]

यहाँ न लाना, भले सिंधु में वहीं डुबोना

जाते हो तो मान हेतु तुम सब जाओ।

विंध्य-हिमाचल-भाल भला। झुक जाये धीरो,

चंद्र-सूर्य-कुल-कीर्ति-कला रुक जाय न वीरों

इसी प्रकार सीता के इन उद्गारों में नारी की स्वतंत्र सत्ता और महत्ता प्रकट होती है :

औरों के यहाँ नहीं पलती हूँ

अपने पैरों पर खड़ी आप चलती हूँ

श्रमवारि बिंदु फल स्वास्थ्य शक्ति फलती हूँ

अपने अंचल से व्यंजन आप झलती हूँ

तनु-लता-सफलता-स्वाद आज ही आया

मेरी कुटिया में राज भवन मन भाया।[9]

उर्मिला के अतिरिक्त साकेत में सुमित्रा, मथरा, कैकेयी, सीता, कौशल्या आदि जितने भी नारी चरित्र हैं उनके व्यक्तित्व में गुप्त जी ने युगानुकूल नई उदभावनाएँ की हैं। मसलन रामचरितमानस की कैकेयी के लिए तुलसी ने "गई गिरा मति फेरि" वाक्य का प्रयोग किया

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 3, March 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0903015 |

है जबकि गुप्त जी ने कैकेयी के विरोध को मनोवैज्ञानिक कारणों के परिप्रेक्ष्य में ठाला है। कैकेयी के साथ उसके पुत्र पर भी संदेह किया गया, इसलिए वह प्रतिशोध करती है। मानस की मंथरा का कहना था।

"कोउ नृप होहु हमहिं का हानी
चेरि छाँड अब होब कि रानी
जबकिं साकेत की मंथरा कहती है :
दण्ड दें कुछ भी आप समर्थ
कहा क्या मैंने अपने अर्थ?
समझ में आया जो कुछ मर्म
उसे कहना था मेरा धर्म
गुप्त जी ने कैकेयी द्वारा पश्चाताप के बोल भी बुलवाकर मानो उसके पापों को धो डाला है :
थूके मुझ पर त्रैलोक्य भले ही थूके
जो कोई कह सके, कहे, क्यों चूके
युग-युग तक चलती रही कठोर कहानी
रघुकुल में भी थी एक अभागिन रानी।[10]
"साकेत' में यदि केंद्रीय चरित्र उर्मिला और उसकी विरह-वेदना का चित्रण हुआ है तो "यशोधरा में गुप्त जी ने गौतम बुद्ध, राहुल तथा यशोधरा की कथा को आधार बनाकर यशोधरा को जीवंत किया है। यशोधरा पर तत्कालीन नारी जागरण का प्रभाव और भी ज्यादा और मुखर रुप से दिखाई पड़ता है। राष्ट्रीय आंदोलन में हजारों स्त्री पुरुष घरखार का मोह छोड़कर कूद पड़े थे। व्यक्तिगत सुख-दुख को उन्होंने भुला दिया था। इसी प्रकार सत्य की खोज में गौतम बुद्ध पत्नी-बच्चे को रात में सोते छोड़ कर अचानक एक दिन घर से निकल गये थे। ऐसी स्थिति में गुप्त जी की यशोधरा पर इसका जो असर हुआ उसे वह इस प्रकार व्यक्त करती है :[14]

सिद्धि हेतु स्वामी गये, यह गौरव की बात
पर चोरी-चोरी गये, यही बड़ा व्याघात
सखि, वे मुझसे कह कर जाते कह,
तो क्या मुझको वे अपनी पथ बाधा ही पाते
यह बात वह नारी ही कह सकती है जो जागरूक हो, जिसे अपने स्वतंत्र अस्तित्व का एहसास हो और जो "सिद्धि के महत्व को समझती हो। अर्थात् समाज से जिसका सीधा संबंध है, जो सोचती-समझती और जीवन में पुरुष के समकक्ष कंधे से कंधा मिलाकर सारे बोझ उठाने के लिए तैयार हो। इसके आगे भी जब गौतम के जाने के संदर्भ में बात-चीत होती है तो यशोधरा अपने परिपक्व व्यक्तित्व का परिचय देती है:
"तात, सोचो, क्या वे इसी अर्थ हैं
खोज हम लायें उन्हें, क्या वे असमर्थ हैं।[11]

यशोधरा के विरहणी व्यक्तित्व में उसका मातृत्व भी जुड़ा हुआ है। इसलिए गुप्त जी ने उसके मातृत्व रूप को, पुत्र-वधु के रूप को उसके विरहणी व्यक्तित्व के साथ-साथ विकसित किया है। यशोधरा, उर्मिला, सीता आदि जितने भी गुप्त जी के नारी पात्र हैं, वे विरही हो कर भी मध्यकालीन विरहिणियों की तरह से दीन-दुनिया भूलकर ज़ार-ज़ार आँसू नहीं बहाते बल्कि विरह का दुख उन्हें द्रवित करके जगत के दुखों के प्रति संवेदनशील बनाता है और वे कर्मठ बन कर जनता के साथ तादात्म्य स्थापित करने की कोशिश करते हैं। "साकेत' में सीता का चरित्र भी इसी प्रकार विकसित हुआ है। हालाँकि गुप्त जी की सीता तुलसीदास की सीता से प्रेरित और प्रभावित है किंतु गाँधी-युग में रचित होने के कारण वे स्वदेशी आंदोलन के वातावरण में रंगी हुई है।[13]
इसलिए तुलसी की सीता जहाँ सामंती माहौल की ऐसी नारी के घेरे में मानवी का अभिनय करती है, वहाँ गुप्त जी की सीता स्वतंत्रता आंदोलन में नारी की आदर्शमूर्ति बनने लगती है। स्वतंत्रता आंदोलन में नारी की आदर्शमूर्ति वह है जहाँ वह पत्नी, प्रेमिका, माँ, बहन के रूपों के साथ-साथ श्रमशील, आर्थिक रूप से स्वतंत्र व्यक्तित्व की स्वामिनी है। इसलिए गुप्त जी की सीता का कहना है :

औरों के हाथों यहाँ नहीं पलती हूँ
अपने पैरों पर खड़ी आप चलती हूँ
श्रमवारि बिंदु फल स्वास्थ्य शुचि फलती हूँ
अपने अंचल से व्यंजन आप झलती हूँ
तनुजात-सफलता-स्वादु आज ही आया
मेरी कुटिया में राजभवन मन भाया

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 3, March 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0903015 |

निश्चित रूप से गुप्तजी की नारी चेतना पारंपरिक नहीं है। नारी को वे शिक्षिता, आत्मसम्मानी, स्वाभिमानी देखना चाहते हैं, राष्ट्रीय आंदोलन में उसकी सक्रिय भूमिका के पक्षधर हैं, किंतु यह सब परिवर्तन गृहिणी के रूप में उसकी पारिवारिक भूमिका को हट कर वह नहीं चाहते। यहाँ पर भी गुप्तजी की अतीतमूलक सुधारवादी दृष्टि सक्रिय दिखाई पड़ती है।[12]

परिणाम

मैथिलीशरण गुप्त यद्यपि राष्ट्रीय चेतना के लिए जाने जाते हैं लेकिन फिर भी उनके साहित्य में अन्य काव्यगत प्रवृतियां व विषय-वस्तु का वर्णन भी प्रभावी व व्यापक रूप में हुआ है | उन्होंने इतिहास की उन नारी पात्रों को उच्च शिखर पर बिठाया जिनके लिए हमारा इतिहास प्रायः मौन रहा है |[12] उर्मिला, यशोधरा और विष्णुप्रिया जैसे नारी पात्रों को आधार बनाकर उन्होंने जिन काव्य-ग्रंथों की रचना की उससे इन नारी पात्रों के व्यक्तित्व के विषय में कुछ नई मान्यताएं स्थापित होती हैं और पाठकों के मन में इन नारी पात्रों के प्रति एक विशेष सम्मान की भावना का सृजन होता है | इतना ही नहीं गुप्त जी ने कैकेयी, कुब्जा आदि नारी पात्रों को घृणा एवं अपमान की संकीर्ण गलियों से निकालकर सम्मानीय पद पर सुशोभित किया | मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में नारी-चित्रण रीतिकालीन कवियों के समान अश्लील न होकर छायावादी कवियों की भाँति पवित्र है |[13]

मैथिलीशरण गुप्त जी के अनुसार नारी का जीवन प्रायः दुखों और विवशताओं से भरा होता है | वह जीवन भर अपनी संतान का पालन-पोषण करती है, अपने परिवार के सदस्यों की देखरेख करती है ; लेकिन उसकी आँखों से सदैव आँसू छलकते रहते हैं |[11]
नारी त्यागशीलता, ममता, कोमलता, श्रद्धा आदि गुणों के होने पर भी खुशियों से वंचित रहती है | इस तथ्य को अभिव्यक्त करते हुए गुप्त जी कहते हैं —

" अबला जीवन, हाय! तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में है दूध और आँखों में पानी |"[10]

गुप्त जी के अनुसार किसी परिवार के विकास में नारी की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है | पुत्र को संस्कार देने, उसे जीवन की विकट परिस्थितियों से जूझने के लिए तैयार करने और उसके उन्नति के मार्ग को प्रशस्त करने में माँ की भूमिका अप्रतिम होती है | नारी पत्नी के रूप में अपने पति का संबल बनते हैं | नारी उसके आदर्शों की संवाहिका और उसकी प्रेरणा शक्ति होती है | मैथिलीशरण गुप्त जी 'साकेत' में सीता को राम की तथा 'उर्मिला' में उर्मिला को लक्ष्मण की प्रेरणा शक्ति मानते हैं | सीता और उर्मिला दोनों ही स्वयं दुख झेलते हुए अपने-अपने पतियों के आदर्शों की रक्षा करती हैं | ठीक यही स्थिति 'यशोधरा' में दिखाई देती है जहाँ यशोधरा सिद्धार्थ के घर छोड़कर चले जाने पर उसके निर्णय का सम्मान करती है और सिद्धार्थ को आत्मग्लानि से बचाकर उसे सिद्धार्थ से महात्मा बुद्ध बनने और मानव सेवा के मार्ग पर चलने के कार्य को सरल बनाती है |[14]
मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में नारी-चित्रण से उनके हृदय की विशालता एवं उदारता का परिचय मिलता है | गुप्त जी ने नारी के न्यायोचित अधिकार की मांग की है | शकुंतला, सैरंध्री, सीता, उर्मिला, कैकेयी, मांडवी, राधा, कुब्जा, हिडिंबा आदि नारी पात्रों के माध्यम से उन्होंने नारी के त्यागमय, प्रेरक, उज्जवल पक्ष को उद्घाटित किया है | गुप्त जी की यह नारी भावना न तो रीतिकालीन वासना से युक्त है और न भक्तिकालीन रागवृत्ति से पूर्ण | नारी को प्रेम, पवित्रता और शक्ति का समन्वित रूप मानते हुए वे लिखते हैं [9]—

"हैं प्रीति और पवित्रता की मूर्ति-सी वे नारियाँ,
हैं गेह में वे शक्तिरूपा, देह में सुकुमारियाँ |"[8]

गुप्त जी की नारियों का स्वरूप प्रायः अबला के रूप में है | वे विभिन्न प्रकार के कष्टों को सहन करती हुई अपने कर्तव्य का पालन करती रहती हैं | कहीं-कहीं न्यायोचित अधिकारों की माँग तो करती हैं परंतु उनके लिए दृढ़ आग्रह करने का सामर्थ्य उनमें नहीं है | गुप्त जी ने अपने काव्य में वर्णित नारियों के इस अवगुण को भारतीय संस्कृति के आवरण से ढकने की कोशिश की | हाँ ; प्रेम, त्याग, समर्पण आदि गुणों के दृष्टिकोण से उनके नारी-पात्र हिंदी साहित्य में अद्वितीय बन पड़े हैं |[7]

उर्मिला अपने पति लक्ष्मण के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर देती है | उर्मिला के त्याग की पराकाष्ठा को गुप्त जी ने इस प्रकार अभिव्यक्त किया है —

"नव वय में ही विश्लेष हुआ, यौवन में ही यति वेश हुआ |"[6]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 3, March 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0903015 |

गुप्त जी की नारियों का हृदय-पक्ष पुरुषों की अपेक्षा प्रबल है क्योंकि उनमें पुरुषों के समान केवल बौद्धिक प्रबलता ही नहीं है अपितु प्रेम, दया, करुणा, त्याग, सहानुभूति आदि मार्मिक गुणों का भी संयोग है | परंतु यह प्रबलता केवल सहन करने में है, प्रतिकार करने में नहीं | गुप्त जी की नारियाँ कहीं-कहीं गलत के विरुद्ध आवाज़ उठाती हैं लेकिन ऐसे उदाहरण कम ही मिलते हैं | केवल ऐसे पात्रों के विरुद्ध नारी के कटु वचन दिखलाए गए हैं जिन्हें हम खल पात्र के रूप में जानते हैं लेकिन जब उनके अपने माता, पिता, पति या वे पात्र जिन्हें हम नायक या अवतार के रूप में जानते हैं, नारी के विरुद्ध कोई अन्यायपूर्ण निर्णय लेते हैं तो प्रताड़ित नारियाँ मूक हो जाती हैं | संभवतः गुप्त जी परम्परा से प्रचलित नारी शोषण के उदाहरणों के विरुद्ध आवाज़ उठाने का साहस नहीं कर पाए |[5]

गुप्त जी की नारी तन से अबला व सुकुमारी है | केवल रावण जैसे खल पात्रों के विरुद्ध उसका सशक्त और सबल रूप सामने आता है | सीता रावण को करारी फटकार लगाते हुए नारी के सबल रूप की झलक दिखाती है —

"जीत न सका एक अबला का मन, तू विश्वजयी कैसा?[4]
जिन्हें तुच्छा कहता है, उनसे भागा क्यों तस्कर ऐसा?"

मैथिलीशरण गुप्त जी ने नारी की कर्तव्यपरायणता का विशद वर्णन किया है | उनके अनुसार कर्तव्यपरायणता नारी का विशिष्ट गुण है | गुप्त जी की नारियां पति एवं पारिवारिक सदस्यों की उन्नति एवं सुख-सुविधा का ध्यान रखना अपना कर्तव्य मानती हैं | गुप्त जी की नारियाँ चाहे कितनी ही दुख में जी रही हों किंतु वे अपने कर्तव्य से विमुख नहीं होती | राम के साथ सीता और लक्ष्मण के वन जाने का निर्णय सुनकर उर्मिला लक्ष्मण के मार्ग में विघ्न नहीं बनती |

"कहा उर्मिला ने हे मन! तू प्रिय-पथ का विघ्न न बन |"[3]

गृहस्थ धर्म का पालन करना नारी का सर्वोपरि कर्तव्य माना जाता है | गुप्त जी की नारियां इस धर्म-पालन में कहीं भी नहीं चूकती | सीता वन में पौधों को पानी देना और खुरपी लेकर खेती करना अपना कर्तव्य मानती है | वह राम तथा लक्ष्मण के लिए रसोई बनाने में तृप्ति का अनुभव करती है |

"बनाती रसोई, सभी को खिलाती, इसी काम में आज मैं तृप्ति पाती |"

यशोधरा अपने पति सिद्धार्थ की अनुपस्थिति में पुत्र का पालन-पोषण करना अपना कर्तव्य समझती है तो विष्णुप्रिया सास की सेवा एवं घर की सफाई को अपना धर्म मानती है |

"रात रहते ही उठ झाड़ घर,
भृत्य के रहते हुए भी स्वयं सेवा करती सास की |" (विष्णुप्रिया)[2]

गुप्त जी ने अपने काव्य में उपेक्षित समझे जाने वाली नारी पात्रों को स्थान देकर उनके प्रति सहानुभूति अभिव्यक्त की है | भले ही गुप्त जी ने आधुनिक कवियों की भांति नारी के पुरुषों के समान अधिकार की बात नहीं की परंतु नारी के त्याग, समर्पण और प्रेम के महत्व को प्रतिपादित अवश्य किया | भारतीय मिथक शास्त्रों में वर्णित छवि के आधार पर सीता को अवश्य माता कहकर सम्मान प्रदान किया जाता है परंतु अन्य सभी पात्र उपेक्षित ही रहते हैं | गुप्त जी अपने काव्य में सीता के साथ-साथ कैकेयी, उर्मिला, यशोधरा, कुब्जा, हिडिम्बा आदि नारी पात्रों को भी अपेक्षित स्थान व सम्मान प्रदान करते हैं |[1] गुप्त जी 'रामचरितमानस' की लांछिता कैकेयी को 'साकेत' में आदरणीय माता के रूप में उपस्थित कर सबको आश्चर्यचकित कर देते हैं और अपनी मौलिक उदभावना का परिचय देते हैं |

माता चाहे पौराणिक ग्रंथों की हो, वर्तमान की हो या अतीत की ; प्रत्येक युग और प्रतीक देशकाल में माता अपनी संतान के लिए सभी दुखों को सहन करती है और उस पर अपने दखों की छाया भी नहीं आने देती | 'यशोधरा' में माता यशोधरा स्वयं सभी दुःखों को सहन करते हुए अपने बेटे राहुल को उनसे दूर रखना चाहती है |[2]

"बेटा मैं तो हूँ रोने को, तेरे सारे मल धोने को, हँस तू.... |"

त्याग, दया और ममता की प्रतिमूर्ति नारी में स्वाभिमान की भावना भी कूट-कूट कर भरी हुई है | यशोधरा को अपने प्रेम और भक्ति पर पूर्ण विश्वास है | इसीलिए वह प्रभु गौतम के दर्शन के के लिए जाने से मना कर देती है और विश्वासपूर्वक कहती है —

"भक्त नहीं जाते कहीं, आते हैं भगवान |"

'यशोधरा' में गौतम बुद्ध यशोधरा के मान की रक्षा करते हैं | वस्तुतः यह गुप्त जी की नारी-विषयक भावना की काव्यमय अभिव्यक्ति है |[3]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 3, March 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0903015 |

नारी पुरुष की अर्धांगिनी है | वह पति के प्रत्येक सुख-दुख की संगिनी है | इसी भाव के बल पर सीता वन-गमन की अनुमति लेने में सफल होती है, उर्मिला अपने पति को सहर्ष वन में भेज देती है और यशोधरा इसी अधिकार-भाव से गौतम की उपलब्धि में अपना अंश मानती है —

"उसमें मेरा भी कुछ होगा, जो कुछ तुम पाओगे |"
गुप्त जी ने अपने साहित्य में नारी को पुरुष का प्रेरणा स्रोत माना है |गुप्त जी के अनुसार नारी पुरुष को उन्नति की दिशा में ले जाती है |नारी कभी माँ के रूप में, कभी पत्नी के रूप में और कभी बहन के रूप में पुरुष को प्रेरित करते है | संकट के समय में वह अपने पुत्र, पति, भाई आदि की रक्षा करती है | नारी समस्त मानव जाति के प्रति कल्याणकारी भावनाएँ रखती है | 'यशोधरा' में गौतम बुद्ध स्वयं इस तथ्य को स्वीकार करते हैं —
"क्षीण हुआ वन में क्षुधा से मैं विशेष जब |[4]
मुझ को बचाया मातृजाति ने ही खीर से |"
अपने कर्तव्य का भली प्रकार निर्वहन करने के उपरांत भी यदि नारी प्रताड़ित व लांछित हो तो उसका प्रतिकार करना स्वाभाविक है | पाँच पतियों वाली पांचाली कीचक से लांछित होकर कह उठती है —

"जिसके पति हों पाँच-पाँच ऐसे बलशाली |
सहूँ लांन्छना प्रिया उन्हीं की मैं पांचाली ||"
नारी को गृहलक्ष्मी कहा गया है | वह घर की स्वामिनी है | यह पद उसे कठोर साधना के पश्चात प्राप्त हुआ है | वह आंतरिक व्यवस्था की संचालिका है | 'जय भारत' में स्वावलंबन पर बल देते हुए नारी के इसी रूप को महत्व दिया गया है |[5]
गुप्त जी ने नारी के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत करके उसके उदात्त एवं आदर्श रूप को स्वीकार किया है | नारी क्षमा की देवी है | एक स्वर से सांसारिक भोगियों एवं आध्यात्मिक योगियों ने अपने अपराधों को स्वीकार करते हुए उससे क्षमा याचना करके ही महान पद की प्राप्ति की है —

"पैरों पर गिर पड़े प्रिया के भूपवर.....|" (शकुंतला)[6]
बड़े-बड़े ऋषि-मुनि नारी के त्याग और समर्पण के आगे नतमस्तक हैं-

""गिर पड़े दौड़ सौमित्र प्रियापद-तल में |" (साकेत)
मैथिलीशरण गुप्त जी मुख्य रूप से उपेक्षित नारियों के उन्नायक माने जाते हैं परंतु इसके साथ-साथ सामान्य गृहस्थ नारियों के त्याग और समर्पण का वर्णन करके वे मानव सभ्यता के विकास में नारियों के अद्वितीय योगदान को प्रकाश में लाते हैं | वस्तुतः मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में नारी-चित्रण भारतीय परंपरा के अनुकूल मिलता है जो प्रेम, त्याग, समर्पण और सहनशीलता की मूर्ति है | यदि केवल इस परंपरागत दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए मूल्यांकन किया जाए तो गुप्त जी का नारी-वर्णन हिंदी साहित्य की एक मूल्यवान निधि है | भले ही गुप्त जी नारी शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने वाले किसी क्रांतिकारी नारी-पात्र का सृजन नहीं कर पाए परंतु फिर भी उनके काव्य में नारी के महान कार्यों व उसके त्याग के प्रति आदरांजलि तो मिलती ही है |[7]

निष्कर्ष

प्राचीन भारतीय समाज में नारी को उच्च एवं गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त था। उसकी मान्यता रही है कि जहाँ नारियों के सम्मान होता है वहाँ देवता निवास करते हैं-

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताट
(क) काव्य की आपेक्षित नारियों का पुनरुत्थान- ऐसा होते हुए भी प्राचीन काल से ही कुछ तप, त्याग, पतिव्रत में अडिग तथा उज्ज्वल एवं उदात्त चरित्र वाली नारियों की उपेक्षा होती रही है। यहाँ तक कि 'मा निषाद प्रतिष्ठा त्वमगमः शाश्वती समाः' कहने वाले दर्याद्रवित आदि कवि वाल्मीकि ने भी सीता के चरित्र को उदात्त एवं सर्वाधिक गौरव प्रदान करने के प्रयत्न में उर्मिला को उपेक्षित किया प्रथमतः कवीन्द्र रवीन्द्र की दृष्टि इन उपेक्षित नारियों पर पड़ी और 'काव्येर उपेक्षिता नारी' शीर्षक लेख लिखा। इसी समय पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता पर हिन्दी में एक लेख लिखा जिसके कारण मैथिलीशरण गुप्त का युवा कवि हृदय अनुप्रेरित एवं उत्साहित हुआ। परिणामतः गुप्तजी ने काव्य की उपेक्षित नारियों पुनरुत्थान एवं उद्धार का बीड़ा उठाया। वस्तुतः गुप्तजी

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 3, March 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0903015 |

के प्रमुख काव्यग्रन्थों की सर्जना उपेक्षिता एवं तिरस्कृत नारियों की मनोव्यथा एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए ही हुई है। उनका हृदय नारी जाति के प्रति अत्यन्त स्पन्दनशील एवं संकरुण रहा है।[8]

(ख) परवश एवं परतंत्र नारियों के प्रति दृष्टिकोण— गुप्त जी के सहृदय कवि ने विरहविदग्धा उर्मिला की मर्मव्यथा को साकेत के माध्यम से वाणी प्रदान की। यहीं, उन्होंने युगों से तिरस्कृत कैकेयी का भी उद्धार किया। उर्मिला के पश्चात् कवि ने भगवान बुद्ध की उपेक्षिता पत्नी यशोधरा की करुण गाथा गायी है। तत्पश्चात् उनकी दृष्टि चैतन्यदेव की उपेक्षिता एवं निरीक्ष धर्मपत्नी विष्णुप्रिया पर गायी। इसके अतिरिक्त द्वापर में उन्होंने युगों से पुरुषों के कठोर नियन्त्रण में पड़ी परवश एवं परतन्त्र नारी की स्वस्थ वायु में श्वास लेने का अवसर प्रदान किया।[9]

(ग) 'साकेत' की उर्मिला पति वियोग में 'अवधि शिला का उर पर गुरुतर भार' रखकर अपने अश्रु नेत्रों से प्रतीक्षारत है। हाँ, उसे सहारा है तो केवल यहीं कि उसके उपवन का प्यारा हिरण चौदह वर्षों तक वन में विचरण करने के उपरान्त घर वापस आ जाएगा किन्तु यशोधरा और विष्णुप्रिया की तो यह भी आश्वासन नहीं प्राप्त है क्योंकि उनके प्रिय तो सदैव के लिए घर-बार छोड़कर संन्यस्त हो गये हैं। यशोधरा की सान्त्वना के लिए उसकी मलिन गूदड़ी का लाल राहुल अवश्य है किन्तु विष्णु प्रिया को तो यह सम्बल भी नहीं प्राप्त है।[10]

(घ) उपेक्षित नारियों के जीवन के विविध पक्षों पर प्रकाश– कवि ने इस उपेक्षिता नारियों के जीवन के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला है। पिता जनक के स्नेह एवं दुलार में पली हुई अल्हड़ तथा चपल बालिका किस प्रकार लक्ष्मण का साहचर्य पाकर मधुर जीवन दाम्पत्य की ओर अग्रसर होती है, कवि ने इसका बड़ा मनोवैज्ञानिक एवं भावावेगपूर्ण चित्र खींचा है। पुनः अचानक राम वन गमन के अवसर पर उसका सुखमय दाम्पत्य जीवन स्वप्न सुख की भाँति तिरोहित हो जाता है। प्रियतम को वनगमन की अनुमति देना तो दूर वह नयी वधू भोली-भाली इस आकस्मिक विपत्ति से मर्माहत हो केवल 'हाय' कहकर धड़ाम से पृथ्वी पर गिर पड़ती है। अपने प्रिय की की अनुगामी वह इसलिए नहीं बनी की उसके कारण लक्ष्मण के सेवा भाव में विघ्न उपस्थित होगा। वह प्रिय पथ का विघ्न न बनने का संकल्प स्वेच्छा से करती है। चित्रकूट में सीता की कुटिया में उसका अपने प्रियतम से मिलन अवश्य होता है,[11] किन्तु वह अत्यन्त क्षणिक, लक्ष्मण को द्विविधात्मक स्थिति में पाकर वह उन्हें सान्त्वना देती हुई कहती है-

मेरे उपवन के हरिण आज वनचारी।
मैं बाँध न लूंगी तुम्हें तजो भय भारी॥

पति की मृत्यु हो जाने पर वह क्षण मात्र भी जीवन नहीं धारणा कर सकती है। उसे एक सती का सा आत्मविश्वास है, तभी तो वह कहती है-

जीते हैं वे वहाँ यहाँ जब मैं जीती हूँ।

वाल्मीकी एवं तुलसी की कैकेयी से गुप्तजी की कैकेयी सर्वथा भिन्न हैं। उन्होंने उसके दोष एवं कलंक परिहार का अभिनव प्रयास किया है। चित्रकूट की सभा में वह अपने मातृत्व की दुहाई देकर अपने कृत्य का मनोवैज्ञानिक कारण उपस्थित करती है। उसके पाश्चाताप से सभी भाव-विह्वल हो उठते हैं-

सौ बार धन्य वह एक लाल की माई।[12]

इस प्रकार उस तिरस्कृत नारी का उद्धार करके कवि ने उसके चरित्र को उज्ज्वल रूप प्रदान किया है। गुप्त जी ने 'यशोधरा' में नारी-जीवन की चिरयुगीन कथा केवल इन दो पंक्तियों में अंकित की है-

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही काहनी ।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।

नरीप्रिय वियोग में अश्रुजल बहाती है, दूसरी ओर स्वयं क्षीण रहकर स्तन्यपान कराकर सन्तान को सम्पुष्ट करती है। विरह एवं वात्सल्य के मध्य अपना बलिदान करना ही उसकी चिरयुगीन कथा है। कवि की दृष्टि में नारी वासनापूर्ति का साधन मात्र नहीं है। वस्तुतः वह गृहिणी एवं मंगलमय जननी ही है—

वधू सदा मैं अपने वर की, क्या पूर्ति वासना भर की?
सावधान! हाँ निजकुल घर की जननी मुझको जानो ॥

'यशोधरा के पश्चात् गुप्त जी ने 'विष्णुप्रिय' का सृजन करके नारी के त्यागमय कर्तव्यपरायण कष्ट सहिष्णु एवं आदर्श रूप को प्रस्तुत किया।[13]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 3, March 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0903015 |

मूल्यांकन- पुरुष सदैव से नारी के प्रति संशकित एवं अविश्वासी रहा है। नारी के प्रति उसकी वासनात्मक दृष्टि ही प्रधान रही है। वह इतना शंकालु रहा है कि नारी एकान्त में अपने सगेभाई, पुत्र एवं पिता के साथ ही रहन में स्वतन्त्र नहीं है। गुप्त जी को नारी के प्रति यह कृत्रिम एवं समाज द्वारा आरोपित पराधीनता असह्य हो उठी।

उनकी नारी में आत्मबल है, वह भयभीत नहीं होती। उस पर किये गये अत्याचार एवं अन्याय का प्रतिरोध करने के लिए उद्यत दिखाई पड़ती हैं-

इस अन्याय समझ मरूँ मैं कभी नहीं झूक सकती।
संशयशील युग की उसे भी परवाह नहीं है।
इस प्रकार उनकी नारी भारतीय संस्कृति एवं मर्यादाओं का पूर्णरूपेण परिपालन करती हुई दृष्टिगोचर होती है.[14]

संदर्भ

1. "मैथिली शरण गुप्त". मिलनसागर. मूल (एचटीएमएल) से 8 दिसंबर 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 3 जनवरी 2007.
2. ↑ "मैथिलीशरण गुप्त सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय कवि थे". मूल से 15 अप्रैल 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 अप्रैल 2019.
3. ↑ "राष्ट्रकवि व उनकी भारत भारती". मूल से 15 अप्रैल 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 अप्रैल 2019.
4. ↑ "Archived 2015-10-15 at the Wayback Machine" (PDF). Ministry of Home Affairs, Government of India. 2015. Archived from the original (PDF) on 15 November 2014. Retrieved 21 July 2015.
5. ↑ [https://www.shikshabhartinetwork.com/dayinhistory.php?eventId=3778 मैथिलीशरण गुप्त
6. ↑ "चारुचन्द्र की चंचल किरणें". kavitakosh.org. मूल से 6 अप्रैल 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 20 अप्रैल 2019.
7. शर्मा, राहुल। "राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की जीवनी मैथिली शरण गुप्त जैव" ।
8. ^ (पीडीएफ)। स्पर्श (भाग 2)(हिंदी में)। एनसीईआरटी। पी। 18.आईएसबीएन 81-7450-647-0.
9. ^ संजीव चंदन (4 अगस्त 2009) 'मानवविज्ञानी' प्रेमचंद से प्रेरित कार्य । टाइम्स ऑफ इंडिया ।
10. ^ रूपर्ट स्नेल; इयान रायसाइड (1998)। आधुनिक दक्षिण एशियाई साहित्य के क्लासिक्स । ओटो हैरासोवित्ज़ वेरलाग। पीपी। 240-। आईएसबीएन 978-3-447-04058-7.
11. ^ "पद्म पुरस्कार" (पीडीएफ) । गृह मंत्रालय, भारत सरकार। 2015. 15 अक्टूबर 2015 को मूल (पीडीएफ) से संग्रहीत । 21 जुलाई 2015 को पुनःप्राप्त ।
12. ^ राष्ट्रकवि वद भारत भारती, जागरण, अक्टूबर 15, 2012
13. ^ श्री हरगोविंद, "दद्दा की छाया में", राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अभिनंदन ग्रंथ, एड। अग्रवाल वासुदेवशरण, 1959, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अभिनंदन समिति कलकत्ता, पृ. 101.
14. ↑ ऋषि जैमिनी कौशिक बरुआ, "इखत्तर वर्ष की अभिनंदन्य गाथा", राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अभिनंदन ग्रन्थ, एड. अग्रवाल वासुदेवशरण, 1959, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अभिनंदन समिति कलकत्ता, पृ. 150.

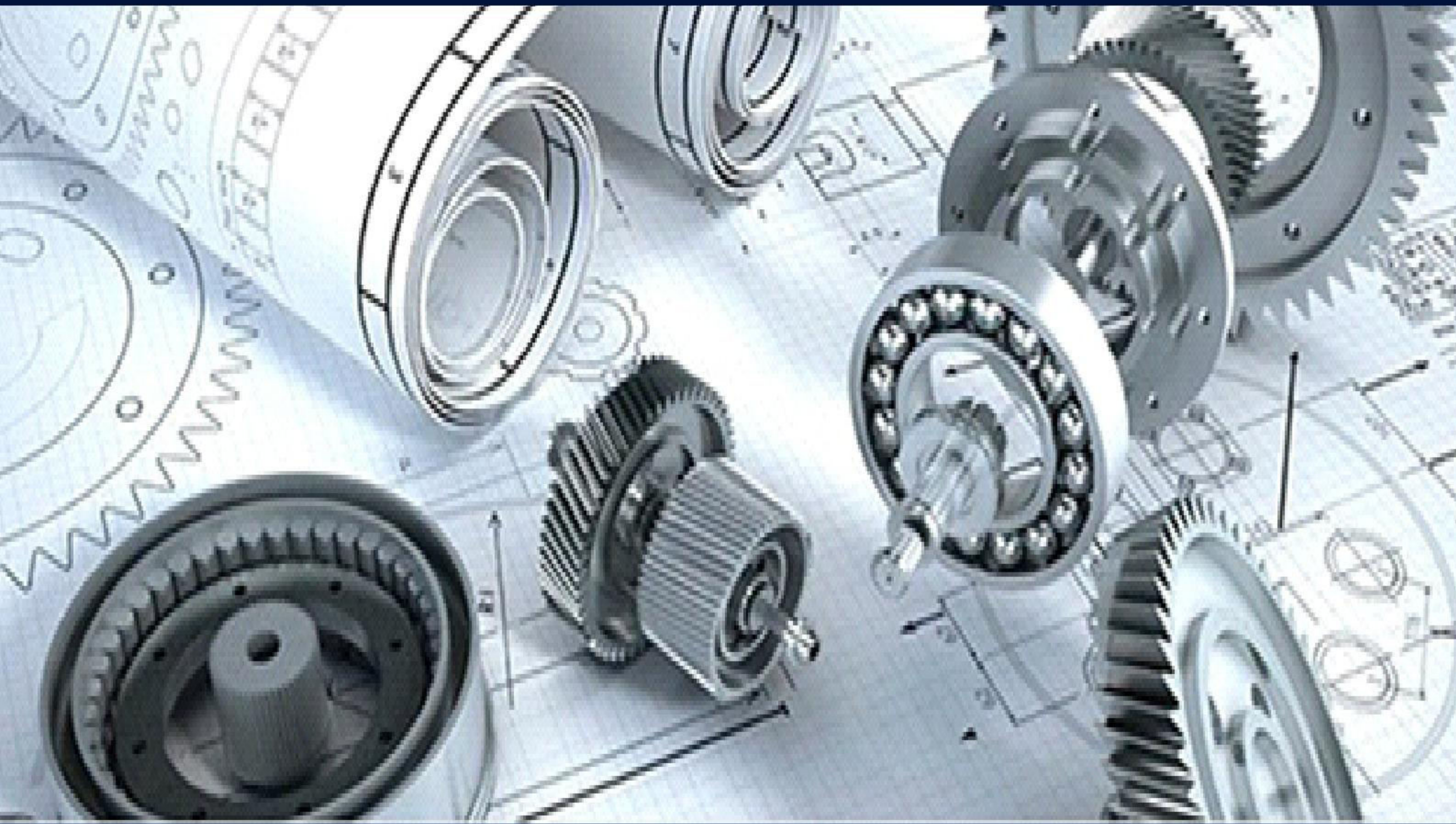

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com

www.ijmrsetm.com